किसान संवाद बैठक में हरियाणा में पुष्प उत्पादन को बढ़ावा देने, बेहतर बाजार व्यवस्था और किसानों की आय बढ़ाने पर जोर

पवन राणा, गुड़गांव मेल



बरवाला। हरियाणा में फूलों की खेती को अधिक लाभकारी बनाने, किसानों की आय बढ़ाने तथा कृषि विविधीकरण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएआरआई), पूसा, नई दिल्ली के पुष्प विज्ञान एवं भू-दृश्य निर्माण प्रभाग में किसान संवाद बैठक आयोजित की गई। बैठक में कृषि वैज्ञानिकों, बागवानी विशेषज्ञों, 60 प्रगतिशील किसानों और विभागीय अधिकारियों ने पुष्प उत्पादन की संभावनाओं, किसानों की व्यावहारिक समस्याओं तथा इस क्षेत्र को मजबूत बनाने के उपायों पर विचार-विमर्श किया।

आईसीएआर-आईएआरआई के एमेरिटस साइंटिस्ट डॉ. एस.एस. सिंधु ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रविंद्र सिंह चौहान ने प्रारंभिक संबोधन में किसानों के अनुभवों और विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर व्यावहारिक सिफारिशें तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। आईसीएआर-आईएआरआई के पुष्प विज्ञान एवं भू-दृश्य निर्माण प्रभाग के प्रमुख डॉ. मार्कंडेय सिंह ने हरियाणा में पुष्प उत्पादन की संभावनाओं पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने स्थानीय जलवायु, मिट्टी, पानी की उपलब्धता और बाजार की मांग के अनुसार उपयुक्त फूलों एवं किस्मों के चयन की आवश्यकता पर बल दिया।

आईसीएआर-आईएआरआई के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. एम.सी. सिंह ने पुष्प उत्पादन में वैज्ञानिक तकनीकों, गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री और आवश्यक बुनियादी सुविधाओं के महत्व पर चर्चा की। झज्जर जिले के मुनीमपुर स्थित फूलों की खेती के उत्कृष्टता केंद्र के उपनिदेशक बागवानी डॉ. मंदीप ने हरियाणा में पुष्प उत्पादन की स्थिति तथा विभागीय पहलों की जानकारी दी।

रोहतक जिले के कलानौर क्षेत्र के गांव मरोढ़ी जट्टान के प्रगतिशील किसान श्री राज कुमार तथा पलवल जिले के गांव पातलीकलां, दुधौला के निकट के प्रगतिशील किसान श्री रणबीर सिंह ने फूल उत्पादकों के व्यावहारिक अनुभव और समस्याएं साझा कीं। चर्चा में फसल बीमा, नुकसान की स्थिति में उचित मुआवजा, बिजली दरों, परिवहन सुविधाओं और बाजार तक पहुंच को प्रमुख मुद्दों के रूप में उठाया गया।

हरियाणा के मुख्यमंत्री के ओएसडी विरेंद्र सिंह बड़खालसा ने बैठक को संबोधित किया। स्विट्जरलैंड स्थित ओक फाउंडेशन के रजत सिंधु ने सजावटी बागवानी में एग्रो-फोटोवोल्टाइक तकनीक पर प्रस्तुति दी, जिसमें पुष्प उत्पादन के साथ सौर ऊर्जा के उपयोग की संभावनाओं पर चर्चा की गई। गुरुग्राम, झज्जर, रेवाड़ी, रोहतक और नूंह (मेवात) के जिला बागवानी अधिकारियों ने विभागीय फीडबैक प्रस्तुत किया। इसके बाद किसानों, वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और अधिकारियों के बीच खुली चर्चा हुई।

मोरनी के किसानों के लिए तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण आयोजित, 70 को मिले प्रमाण-पत्र

नजदीकी बाजार से मोरनी के किसानों को मिलेगा सीधा लाभः डॉ. रविंदर चौहान

मशरूम उत्पादन से आर्थिक रूप से सशक्त होंगे मोरनी के किसान; कृषि वैज्ञानिकों ने सिखाए आधुनिक खेती और कंपोस्ट बनाने के गुर



प्रशिक्षण लेने वालो को प्रमाण प्रत्र देते जिला उधान अधिकारी अशोक कोशिक

मोरनी, 15 अक्तूबर (अनिल) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र पंचकूला की इंचार्ज प्रोफेसर डॉ. श्रीदेवी तल्लाप्रगढ़ा के दिशा-निर्देशों एवं कुशल मार्गदर्शन में मोरनी ब्लॉक के किसानों के लिए 'मशरुम उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस शिविर में मोरनी क्षेत्र के लगभग 70 किसानों और महिला किसानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किसानों को मशरूम की खेती की संपूर्ण नवीनतम जानकारी सांझा की। वैज्ञानिकों ने डिजिटल पीपीटी प्रस्तुतियों और व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा और विशेषकर ट्राइसिटी (पंचकूला, चंडीगढ़, मोहाली) के पास होने से मोरनी के किसानों के पास मशरूम विपणन का एक बड़ा और सीधा बाजार उपलब्ध है।

वैज्ञानिकों ने मशरूम के स्वास्थ्य लाभों तथा बटन, ढिंगरी (ऑयस्टर) मिल्की, शीटाके, रेशि मशरूम और लायंस मेन जैसी विभिन्न किस्मों की पहचान व उनके अलग-अलग फायदों पर प्रकाश डाला। इइस मौके पर जिला बागवानी अधिकारी डॉ अशोक कौशिक भी मौजूद रहे उन्होंने बागवानी विभाग पंचकूला द्वारा किसान हित में चलाई जा रही हरियाणा सरकार की स्कीमों के बारे में बताया और किसानों से आह्वान किया कि वो सरकार द्वारा चलाई जा रही स्कीमों का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाएं। कार्यक्रम के समापन अवसर पर हरियाणा किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रविंदर चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया यह व्यावहारिक ज्ञान मोरनी के किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगा। उन्होंने बताया कि केवीके के वैज्ञानिक निरंतर प्रयासरत हैं कि दूरदराज के क्षेत्रों तक नवीनतम कृषि तकनीक और स्वरोजगार के साधन पहुँचाए जा सकें।

डॉ चौहान ने इस मौके पर हरियाणा सरकार द्वारा मोरनी ब्लॉक के लिए चलाई जा रही प्राकृतिक खेती की मुहिम पर जोर दिया और किसानों को रसायन मुक्त खेती के लिए आह्वान किया। उन्होंने प्रशिक्षण पूरा करने वाले सभी 70 किसानों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

फूलों की खेती को एमएसपी देने की सिफारिश करेगा किसान कल्याण प्राधिकरण

चंडीगढ़। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए कृषि-वानिकी और पुष्पकृषि पर जोर दिया जाएगा। हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण फूलों की खेती के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की सिफारिश करेगा। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और खेती के नए विकल्प उपलब्ध कराना है।

प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आरएस चौहान ने बताया कि धार्मिक अनुष्ठानों, शादियों, सजावट और व्यावसायिक उपयोग के कारण फूलों की मांग बढ़ रही है। दिल्ली-एनसीआर से नजदीकी के कारण हरियाणा के किसानों को बड़े बाजारों तक पहुंच का लाभ मिल सकता है। प्राधिकरण की समिति गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री और ढांचागत सुविधाओं पर 50 फीसदी सब्सिडी देने का प्रस्ताव सरकार को भेजेगी। पुष्पकृषि में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर सख्त प्रतिबंध लगाने की सिफारिश भी की जाएगी।

कृषि-वानिकी और जल प्रबंधन पर जोर

कृषि-वानिकी की संभावनाओं का आकलन किया जा रहा है। दक्षिणी हरियाणा में पानी की कमी और भूजल की स्थिति को ध्यान में रखते हुए स्थानीय मिट्टी, जलवायु और पानी के अनुकूल वृक्ष प्रजातियों की पहचान की जाएगी।

प्राकृतिक खेती के लिए तकनीकी मदद

आरएस चौहान ने बताया कि जैविक और प्राकृतिक उत्पाद तैयार करने वाले किसानों को लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए सरकार से अनुरोध किया जाएगा। खेती में पशुधन, विशेषकर गायों की भूमिका पर भी चर्चा हुई है। किसानों को विशेषज्ञों से जोड़ने के लिए हेल्पलाइन, कॉल सेंटर और मोबाइल एप विकसित करने का सुझाव दिया गया है। ब्यूरो

प्रैस कतरनें

पंजाब केसरी
दिल्ली

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने किसान-केंद्रित रोडमैप तैयार होगा

सी.एम. के ओ.एस.डी. वीरेंद्र सिंह बड़खालसा ने बेहतर बाजार व्यवस्था, गुणवत्तापूर्ण बीज और तकनीकी सहायता पर दिया जोर

पंचकूला, 8 अक्तूबर (मुकेश) : हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण द्वारा गठित 'हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने संबंधी कार्यदल' की पहली बैठक कृषि भवन, सैक्टर-21, पंचकूला स्थित प्राधिकरण कार्यालय में आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता कार्यदल के अध्यक्ष एवं सरदारकृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने की। मुख्यमंत्री हरियाणा के ओ.एस.डी. वीरेंद्र सिंह बड़खालसा को बैठक में विशेष प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।



सैक्टर-21 स्थित हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के कार्यालय में आयोजित जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्यदल की पहली बैठक।

अनुभवों को अन्य किसानों तक पहुंचाने पर भी जोर दिया

बैठक की शुरूआत में हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. आर.एस. चौहान ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने जैविक एवं प्राकृतिक खेती को मजबूत करने के लिए व्यावहारिक और किसान-केंद्रित रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वीरेंद्र सिंह बड़खालसा ने कहा कि प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को उचित तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण बीज एवं अन्य इनपुट, बेहतर बाजार व्यवस्था और लाभकारी मूल्य उपलब्ध करवाना जरूरी है। उन्होंने स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग तथा सफल प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के अनुभवों को अन्य किसानों तक पहुंचाने पर भी जोर दिया।

चुनौतियों और संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई

बैठक में जैविक एवं प्राकृतिक खेती की मौजूदा स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यदल ने कहा कि प्राकृतिक खेती को किसानों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य सुधार, किसानों के ज्ञान एवं कौशल विकास और गुणवत्तापूर्ण इनपुट की उपलब्धता पर भी ध्यान देना होगा।

बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि किसानों, कृषि विशेषज्ञों, विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों, सरकारी विभागों, बाजार एजैंसियों और सफल किसानों के बीच बेहतर समन्वय से ही जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बड़े स्तर पर बढ़ावा दिया जा सकता है।

हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु गठित कार्यदल की प्रथम बैठक आयोजित

पंचकूला, बरवाला, 8 अक्तूबर (सुरेन्दर, पवन राणा): हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण द्वारा गठित हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने संबंधी कार्यदल की प्रथम बैठक हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के कार्यालय में आयोजित की गई।

बैठक में वीरेंद्र सिंह बड़खालसा, मुख्यमंत्री हरियाणा के ओएसडी को विशेष प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल, कुलपति, सरदार कृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात, जो कार्यदल के अध्यक्ष भी हैं, द्वारा की गई।

बैठक में डा. परमिंदर मलिक, वरिष्ठ जिला विस्तार विशेषज्ञ (कृषि अर्थशास्त्र), कृषि विज्ञान केंद्र, सोनीपत, विनीत कुमार, प्रमुख, कोऑपरेटिव सर्विसेज, नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड, नई दिल्ली; डॉ. प्रशांत कुमार, सहायक वैज्ञानिक (प्लांट पैथोलॉजी), क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, करनाल, सीसीएस एचएयू, डॉ. राकेश पोरीया, मार्केटिंग ऑफिसर एवं डीडीए, पंचकूला, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, यशपाल खोला, प्रगतिशील किसान, रेवाड़ी; तथा विनोद कुमार, प्राकृतिक खेती किसान सहित प्राधिकरण के अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक के प्रारंभ में डा. आर. एस. चौहान, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए हरियाणा में जैविक एवं प्राकतिक खेती को सुदढ करने के लिए एक व्यावहारिक एवं किसान-केंद्रित रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। वीरेंद्र सिंह बड़खालसा, विशेष प्रवक्ता, ने बैठक में अपने विचार एवं सुझाव साझा करते हुए प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को उचित तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण इनपुट, बेहतर बाजार व्यवस्था तथा लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग, प्राकृतिक खेती करने वाले सफल किसानों के अनुभवों को व्यापक स्तर पर साझा करने तथा किसानों और विशेषज्ञों के बीच निरंतर संवाद एवं समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। बैठक के दौरान जैविक एवं प्राकृतिक खेती की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। विशेष रूप से प्राकृतिक खेती को किसानों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने तथा अधिक से अधिक किसानों तक इसके लाभ पहुंचाने पर जोर दिया गया।

कार्यदल के अध्यक्ष ने कहा कि प्राकृतिक खेती एक महत्वपूर्ण चुनौती के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण अवसर भी है तथा मिट्टी के स्वास्थ्य और खेती की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को सही रूप से समझकर उन्हें किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता है। सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि प्राकृतिक एवं जैविक खेती ज्ञान-आधारित पद्धति होने के कारण किसानों के लिए तकनीकी एवं ज्ञान आधारित सहायता प्रणाली को मजबूत किया जाना आवश्यक है।

दिनांक

दैनिक जागरण

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए बनेगा किसान-केंद्रित रोडमैप

- जैविक-प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्यदल की पहली बैठक
- किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण इनपुट और बेहतर बाजार उपलब्ध कराने पर जोर

जागरण संवाददाता, पंचकूला : हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए गठित कार्यदल की पहली बैठक कृषि भवन, सेक्टर-21 स्थित हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के कार्यालय में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यदल के अध्यक्ष एवं सरदारकृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने की। मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र सिंह बड़खालसा को विशेष प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। बैठक में हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. आरएस चौहान ने सदस्यों का स्वागत करते हुए किसान-केंद्रित और व्यावहारिक रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वीरेंद्र सिंह बड़खालसा ने कहा कि प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण इनपुट, बेहतर बाजार और लाभकारी मूल्य उपलब्ध करवाना जरूरी है। उन्होंने स्थानीय संसाधनों के उपयोग, सफल किसानों के अनुभव साझा करने तथा किसानों और विशेषज्ञों के बीच निरंतर संवाद स्थापित करने पर भी जोर दिया। कार्यदल के अध्यक्ष ने कहा कि प्राकृतिक खेती चुनौती के साथ-साथ बड़ा अवसर भी है। मिट्टी के स्वास्थ्य और प्राकृतिक कृषि प्रक्रियाओं को समझकर उनका वैज्ञानिक ज्ञान किसानों तक पहुंचाना जरूरी है।



मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र सिंह बड़खालसा हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के कार्यालय में बैठक लेते हुए ●जागरण

आर्गेनिक सीड बैंक बनाने का सुझाव

सदस्यों ने जैविक बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ऑर्गेनिक सीड बैंक स्थापित करने का सुझाव दिया। इसके अलावा क्षेत्र और कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुसार स्थान-विशिष्ट कृषि अनुशंसाएं उपलब्ध कराने पर भी चर्चा हुई। जीवामृत और घनजीवामृत जैसे प्राकृतिक इनपुट तैयार करने के लिए आवश्यक मशीनरी व सुविधाएं विकसित करने का सुझाव दिया गया।

तकनीकी सहायता और बाजार पर जोर : बैठक में किसानों को विशेषज्ञों से जोड़ने के लिए हेल्पलाइन, काल सेंटर और मोबाइल एप विकसित करने तथा सफल जैविक एवं प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों का डेटाबेस तैयार करने पर विचार किया। बेहतर बाजार संपर्क और उचित मूल्य सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। सफल किसानों को रोल माडल बनाकर उनकी सफलता की कहानियां सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से प्रसारित करने का सुझाव दिया।

हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु गठित कार्यदल की प्रथम बैठक आयोजित

डेमोक्रेटिक फ्रंट पंचकूला. हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण द्वारा गठित ‘हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने संबंधी कार्यदल’ की प्रथम बैठक आज कृषि भवन, सेक्टर-21, पंचकूला स्थित हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के कार्यालय में आयोजित की गई।

बैठक में श्री वीरेंद्र सिंह बड़खालसा, मुख्यमंत्री हरियाणा के ओएसडी को विशेष प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल, कुलपति, सरदारकृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात, जो कार्यदल के अध्यक्ष भी हैं, द्वारा की गई।

बैठक में डॉ. परमिंदर मलिक, वरिष्ठ जिला विस्तार विशेषज्ञ (कृषि अर्थशास्त्र), कृषि विज्ञान केंद्र, सोनीपत; श्री विनीत कुमार, प्रमुख, कोऑपरेटिव सर्विसेज, नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड, नई दिल्ली; डॉ. प्रशांत कुमार, सहायक वैज्ञानिक (प्लांट पैथोलॉजी), क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, करनाल, सीसीएस एचएयू डॉ. राकेश पोरीया, मार्केटिंग ऑफिसर एवं डीडीए, पंचकूला, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग; श्री यशपाल खोला, प्रगतिशील किसान, रेवाड़ी; तथा श्री विनोद कुमार, प्राकृतिक खेती किसान सहित प्राधिकरण के अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक के प्रारंभ में डॉ. आर. एस. चौहान, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को सुदृढ़ करने के लिए एक व्यावहारिक एवं किसान-केंद्रित रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

श्री वीरेंद्र सिंह बड़खालसा, विशेष प्रवक्ता, ने बैठक में अपने विचार एवं सुझाव साझा करते हुए प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को उचित तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण इनपुट, बेहतर बाजार व्यवस्था तथा लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग, प्राकृतिक खेती करने वाले सफल किसानों के अनुभवों को व्यापक स्तर पर साझा करने तथा किसानों और विशेषज्ञों के बीच निरंतर संवाद एवं समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने प्राकृतिक एवं जैविक खेती के प्रति किसानों के साथ-साथ उपभोक्ताओं में भी जागरूकता बढ़ाने तथा इसे व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित करने की दिशा में समन्वित प्रयास किए जाने की बात कही।

बैठक के दौरान जैविक एवं प्राकृतिक खेती की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। विशेष रूप से प्राकृतिक खेती को किसानों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने तथा अधिक से अधिक किसानों तक इसके लाभ पहुंचाने पर जोर दिया गया। कार्यदल के अध्यक्ष ने कहा कि प्राकृतिक खेती एक महत्वपूर्ण चुनौती के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण अवसर भी है तथा मिट्टी के स्वास्थ्य और खेती की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को सही रूप से समझकर उन्हें किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता है। सदस्यों ने इस बात पर जोर दिया कि प्राकृतिक एवं जैविक खेती ज्ञान-आधारित पद्धति होने के कारण किसानों के लिए तकनीकी एवं ज्ञान आधारित सहायता प्रणाली को मजबूत किया जाना आवश्यक है।

बैठक में सस्ती एवं पौष्टिक खाद्य सामग्री की उपलब्धता तथा जैविक एवं प्राकृतिक उत्पाद तैयार करने वाले किसानों को लाभकारी मूल्य दिलाने पर विशेष चर्चा हुई। सदस्यों ने माना कि प्राकृतिक खेती के व्यापक विस्तार के लिए किसानों की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सदस्यों ने स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों, जैसे स्थानीय गाय आधारित इनपुट, स्थानीय सूक्ष्मजीव तथा स्थानीय वनस्पति संसाधनों के उपयोग की आवश्यकता पर भी चर्चा की। इससे किसानों की बाहरी इनपुट पर निर्भरता कम करने तथा अधिक टिकाऊ कृषि प्रणाली विकसित करने में सहायता मिल सकती है। खेती एवं संबद्ध गतिविधियों में पशुधन, विशेषकर गायों की भूमिका को उनके वास्तविक योगदान के अनुरूप समझने एवं उपयोग करने पर भी विचार-विमर्श किया गया।

बैठक में जैविक क्षेत्र से संबंधित विभिन्न समस्याओं, जिनमें जैविक उत्पादों एवं प्रमाणित बीज की उपलब्धता, उपयुक्त बाजार का अभाव, मूल्य प्राप्ति में अनिश्चितता तथा उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि न होना प्रमुख हैं, पर चर्चा की गई। किसानों के लिए बेहतर बाजार संपर्क स्थापित करने तथा उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

कार्यदल ने मजबूत विस्तार एवं ज्ञान सहायता प्रणाली विकसित करने पर भी जोर दिया। अन्य राज्यों में सफल मॉडलों की तर्ज पर एक समर्पित तकनीकी संसाधन केंद्र स्थापित करने पर विचार किया गया। इसके साथ ही स्थानीय कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुसार किसानों को मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित एवं जानकार फील्ड स्तर के संसाधन व्यक्ति उपलब्ध कराने की आवश्यकता बताई गई।

किसानों को तकनीकी विशेषज्ञों से जोड़ने के लिए समर्पित हेल्पलाइन/पोस्ट, कॉल सेंटर, मोबाइल एप्लीकेशन एवं मार्गदर्शन की निर्धारित प्रक्रिया विकसित करने का सुझाव दिया गया। विशेषज्ञों तथा सफल जैविक/प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की सूची/डेटाबेस तैयार करने तथा उनकी सफलता की कहानियों और अनुभवों को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने पर भी विचार किया गया। बैठक में जैविक बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करने, सीड सेल को मजबूत करने तथा किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज आसानी से उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। इसके लिए ऑर्गेनिक सीड बैंक स्थापित करने का सुझाव भी दिया गया। साथ ही क्षेत्र, भौगोलिक स्थिति, फसल एवं स्थानीय कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुसार स्थान-विशिष्ट इनपुट एवं कृषि संबंधी अनुशंसाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

कार्यदल ने प्राकृतिक खेती के लिए आवश्यक इनपुट तैयार करने हेतु उपयुक्त मशीनरी एवं सुविधाओं की उपलब्धता पर भी चर्चा की। जीवामृत/घनजीवामृत जैसे प्राकृतिक इनपुट तैयार करने के लिए उचित व्यवस्थाएं विकसित करने का सुझाव दिया गया। सफल प्राकृतिक एवं जैविक खेती की पहलों के आधार पर मॉडल विकसित करने तथा किसानों को प्रमाणित एवं सफल पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने पर भी विचार किया गया।

बैठक में जैविक एवं प्राकृतिक कृषि उत्पादों के लिए मजबूत बाजार व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। सफल किसानों की पहचान कर उन्हें रोल मॉडल के रूप में प्रोत्साहित करने तथा सोशल मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों के माध्यम से उनकी सफलता की कहानियां प्रसारित करने का सुझाव दिया गया, ताकि अन्य किसान भी प्राकृतिक एवं जैविक खेती अपनाने के लिए प्रेरित हो सकें। उपभोक्ता जागरूकता एवं जैविक/प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ाने के विषय पर भी चर्चा हुई। स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं सामाजिक दृष्टि से जैविक एवं प्राकृतिक उत्पादों के लाभों के संबंध में उपभोक्ताओं में जागरूकता बढ़ाने से किसानों को बेहतर बाजार एवं मूल्य प्राप्ति में सहायता मिल सकती है। कार्यदल ने क्षेत्र एवं कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुसार प्राकृतिक खेती के मॉडल विकसित करने पर भी जोर दिया, जिसके अंतर्गत किसानों को स्थानीय परिस्थितियों एवं उपयुक्त फसलों के अनुरूप प्राकृतिक खेती की तकनीकों के संबंध में मार्गदर्शन दिया जा सके। बैठक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि जैविक एवं प्राकृतिक खेती को केवल बाहरी कृषि इनपुट को कम करने तक सीमित न रखते हुए मृदा स्वास्थ्य में सुधार, किसानों के ज्ञान एवं कौशल को मजबूत करने, गुणवत्तापूर्ण बीज एवं इनपुट की उपलब्धता सुनिश्चित करने, बाजार व्यवस्था विकसित करने तथा अंततः किसानों की आय एवं आजीविका को मजबूत करने की दिशा में समग्र रूप से आगे बढ़ाया जाना चाहिए। बैठक के अंत में कार्यदल ने यह विचार व्यक्त किया कि हरियाणा में जैविक एवं प्राकृतिक खेती को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए किसानों, तकनीकी विशेषज्ञों, कृषि विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों, संबंधित सरकारी विभागों, बाजार एजेंसियों तथा सफल जैविक एवं प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए कार्यदल की पहली बैठक

खबरी प्रशाद, पंचकूला। हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण की ओर से गठित जैविक एवं प्राकृतिक खेती कार्यदल की पहली बैठक कृषि भवन, सेक्टर–21 में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यदल के अध्यक्ष एवं सरदारकृष्णनगर दांतीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने की। मुख्यमंत्री के ओएसडी वीरेंद्र सिंह बड़खालसा विशेष प्रवक्ता के रूप में शामिल हुए। बैठक में किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण बीज व इनपुट, बेहतर बाजार और लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया। स्थानीय संसाधनों के इस्तेमाल, जैविक बीज बैंक, तकनीकी सहायता केंद्र, हेल्पलाइन और किसानों को विशेषज्ञों से जोड़ने की व्यवस्था विकसित करने पर भी चर्चा हुई। कार्यदल ने माना कि प्राकृतिक व जैविक खेती के विस्तार के लिए किसानों की आर्थिक व्यवहार्यता, उत्पादों की उचित कीमत और मजबूत बाजार संपर्क जरूरी है। किसानों को रोल मॉडल बनाकर उनकी तकनीकों व अनुभवों को अन्य किसानों तक पहुंचाने तथा कृषि विश्वविद्यालयों, विशेषज्ञों, विभागों और बाजार एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर बल दिया गया।

दक्षिण हरियाणा में दलहनी-तिलहनी फसलों का रकबा बढ़ाने पर कृषि विज्ञान केंद्र में हुआ मंथन, किसानों को प्रोत्साहन राशि देने का सुझाव

फसल विविधीकरण को नई दिशा: बाजरे के विकल्प में मूंग-तिल की खेती बढ़ाने की तैयारी

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

दक्षिण हरियाणा में फसल विविधीकरण को नई दिशा देने के लिए अब खरीफ और रबी सीजन की दलहनी एवं तिलहनी फसलों का रकबा बढ़ाने की तैयारी शुरू हो गई है। कृषि विज्ञान केंद्र महेंद्रगढ़ में आयोजित कार्यदल की बैठक में विशेष रूप से दक्षिण हरियाणा में खरीफ मौसम के दौरान बाजरे के स्थान पर मूंग और तिल जैसी फसलों को बढ़ावा देने का सुझाव सामने आया। इसके लिए इन फसलों को अपनाने वाले किसानों को प्रोत्साहन राशि देने पर भी विचार किया गया।

बैठक की अध्यक्षता हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण की कार्यकारी समिति के अध्यक्ष राजपाल बेनीवाल ने की। उन्होंने कहा कि तिलहनी एवं दलहनी फसलों को बढ़ावा देने से फसल विविधीकरण को गति मिलेगी और किसानों के लिए अतिरिक्त आय के अवसर पैदा होंगे। इसके लिए कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्रों और अन्य संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है।

देश में खाद्य तेल एवं दलहन की मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में उत्पादन बढ़ाना और प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में सुधार करना कृषि क्षेत्र की बड़ी चुनौती है। बैठक में माना गया कि केवल रकबा बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज, क्षेत्र के अनुकूल उन्नत किस्में और वैज्ञानिक खेती की तकनीक उपलब्ध करानी होगी।

बीज से लेकर पानी बचाने तक बनेगी रणनीति

हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रविंद्र सिंह चौहान ने कहा कि अलग-अलग क्षेत्रों की मिट्टी, जलवायु और किसानों की जरूरतों के अनुसार क्षेत्र-विशिष्ट रणनीति तैयार करनी होगी। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण बीज, उन्नत किस्मों के चयन, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, जल संरक्षण तथा कीट एवं रोग प्रबंधन को उत्पादन वृद्धि के लिए जरूरी बताया। कृषि विज्ञान केंद्रों को खेत स्तर तक नई तकनीक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी दी गई है।

खरीफ में मूंग, तिल व अरहर, रबी में सरसों-चना पर फोकस

बैठक में खरीफ और रबी दोनों मौसमों में दलहनी एवं तिलहनी फसलों के क्षेत्र विस्तार की संभावनाओं पर चर्चा हुई। खरीफ सीजन में मूंगफली, तिल, मूंग और अरहर का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया गया। वहीं रबी मौसम में सरसों, चना और मसूर जैसी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानों को इनके प्रति आकर्षित करने की रणनीति बनाई गई। कार्यदल अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार ने कहा कि देश में खाद्य तेल और दालों का आयात कम करना राष्ट्रीय प्राथमिकता है। घरेलू उत्पादन बढ़ाकर न केवल बढ़ती मांग को पूरा किया जा सकता है, बल्कि विदेशी आयात पर निर्भरता भी घटेगी।

कृषि मशीनरी पर सब्सिडी की जरूरत

कृषि विज्ञान केंद्र महेंद्रगढ़ के समन्वयक डॉ. नरेश कुमार यादव ने बताया कि केंद्र द्वारा किसानों को प्रशिक्षण, प्रदर्शन और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से उन्नत कृषि तकनीकों की जानकारी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि दलहनी एवं तिलहनी फसलों को बढ़ावा देने के लिए किसानों को आधुनिक कृषि मशीनरी सब्सिडी पर उपलब्ध करानी होगी। उन्होंने विशेष रूप से सुझाव दिया कि दक्षिण हरियाणा में बाजरे के स्थान पर मूंग एवं तिल की खेती अपनाने वाले किसानों को प्रोत्साहन राशि दी जाए। इससे किसान वैकल्पिक फसलों की ओर आकर्षित होंगे और क्षेत्र में फसल विविधीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

क्यों जरूरी है फसल विविधीकरण

- किसानों को एक ही फसल पर निर्भरता से राहत मिलेगी।
- दलहनी फसलें मिट्टी की उर्वरा शक्ति सुधारने में सहायक हैं।
- तिलहनी उत्पादन बढ़ने से खाद्य तेल आयात कम हो सकता है।
- नई फसलों से किसानों को अतिरिक्त आय के अवसर मिलेंगे।
- कम पानी वाली फसलों को बढ़ावा देकर जल संरक्षण में मदद मिलेगी।

हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने किया कृषि विज्ञान केंद्र का दौरा

सवेरा न्यूज/जसबीर सिंह

कुरुक्षेत्र, 05 अगस्त : हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रविंद्र सिंह चौहान ने कृषि विज्ञान केंद्र, कुरुक्षेत्र का दौरा कर केंद्र में संचालित विभिन्न कृषि एवं किसान कल्याण गतिविधियों का अवलोकन किया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. अश्वनी दहिया, पादप रोग वैज्ञानिक ने डॉ. रविंद्र सिंह चौहान का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। दौरे के दौरान डॉ. रविंद्र सिंह चौहान ने कृषि विज्ञान केंद्र परिसर का भ्रमण कर प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण, कृषि वानिकी, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल संरक्षण तथा किसानों के लिए



संचालित प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन करते हुए वैज्ञानिकों के साथ तकनीकी विषयों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. रविंद्र सिंह चौहान ने कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किसानों के बीच किए जा रहे विस्तार कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केंद्र आधुनिक कृषि तकनीकों को खेत स्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र, कुरुक्षेत्र से), डॉ. अश्वनी दहिया (पादप रोग विज्ञान), डॉ. फतेह सिंह (पादप रोग विज्ञान), डॉ. ललिता रानी (गृह विज्ञान), डॉ. कविता (मृदा विज्ञान) सहित कृषि विज्ञान केंद्र का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

एग्रो टेक



30 तक तैयार कर सकते हैं धान की कम अवधि वाली किस्मों की नर्सरी

बीज उपचार और नर्सरी प्रबंधन पर विशेषज्ञों ने दी सलाह

अमर उजाला ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा में खरीफ सीजन की शुरुआत के साथ धान की खेती की तैयारियां तेज हो गई हैं। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार किसान कम अवधि (बौनी) वाली धान किस्मों की नर्सरी 30 जून तक तैयार कर सकते हैं, जबकि मध्यम अवधि वाली किस्मों की नर्सरी लगाने का उपयुक्त समय 30 मई तक था।

हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं फसल रोग विशेषज्ञ डॉ. आरएस चौहान ने बताया कि नर्सरी तैयार करने से पहले बीजों की छंटाई और उपचार बेहद जरूरी है। किसानों को बीज पानी में डालकर हल्के एवं तैरते बीज अलग कर देने चाहिए। अच्छे बीजों को 3-4 बार साफ पानी से धोकर उपयोग में लाना चाहिए।

उन्होंने बताया कि नर्सरी क्षेत्र में 10 से 12 ट्रॉली गोबर की खाद डालने से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। आवश्यकता अनुसार यूरिया और जिंक सल्फेट का भी उपयोग किया जा सकता है। नर्सरी लगाने के लगभग दो सप्ताह बाद यूरिया की अतिरिक्त मात्रा दी जा सकती है। खरपतवार एवं रोग नियंत्रण के लिए कृषि विज्ञान केंद्र या कृषि विभाग के विशेषज्ञों से सलाह लेने की सलाह दी गई है।

सीधे धान की बिजाई के लिए अपनाएं यह तरीका

विशेषज्ञों के अनुसार सीधे धान की बिजाई के लिए प्रति एकड़ लगभग 8 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीज उपचार के लिए 10 किलोग्राम बीज को 10 लीटर पानी में 10 ग्राम एमिसान या 10 ग्राम कार्बेन्डाजिम तथा 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन मिलाकर 24 घंटे तक भिगोएं। इसके बाद बीज को 1-2 घंटे छाया में सुखाकर बुवाई करें।

खरपतवार नियंत्रण के लिए बिजाई के तुरंत बाद पेंडीमेथालीन 1.3 लीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने की सलाह दी गई है।

कृषि विज्ञान केंद्र ने फलदार पौधे लगाकर मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

पवन राणा, गुड़गांव मेल,बरवाला।



आज 'विश्व पर्यावरण दिवस' के विशेष अवसर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र , पंचकूला द्वारा अपने फार्म पर एक भव्य पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र , पंचकूला हर वक्त प्रोफेसर डा. श्रीदेवी तल्लाप्रगडा की अगुवाई में किसान समुदाय के लिए समर्पित है और किसानों तक खेती के नए और वैज्ञानिक तरीकों को पहुँचाने में लगातार जुटा हुआ है।'विश्व पर्यावरण दिवस' के मौके पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए फार्म परिसर में विभिन्न प्रकार के फलदार पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. रविंदर सिंह चौहान उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने कर-कमलों से फलदार पौधा लगाकर इस अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर क्षेत्र के गांव के पंच, प्रगतिशील किसान और ग्रामीण युवा मौजूद रहे, जिन्होंने पर्यावरण को हरा-भरा रखने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि ने अपने संदेश में बताया कि 'आज के समय में पर्यावरण को बचाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकुला का यह केमिकल-मुक्त फार्म इस बात का आदर्श उदाहरण है कि कैसे हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना बेहतर और सुरक्षित खेती कर सकते हैं।

यहाँ की तकनीकें हर किसान तक पहुँचनी चाहिए। 'इस अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकुला के पूरे फार्म का विस्तृत दौरा किया और केंद्र के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर फार्म पर चल रही विभिन्न कृषि गतिविधियों और तकनीकों का बारीकी से निरीक्षण किया।केंद्र के वैज्ञानिकों ने आए हुए युवाओं और सरपंचों को फार्म का दौरा कराया और उन्हें प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी और जहर-मुक्त भोजन मिल सके।

कृषि विज्ञान केंद्र ने फलदार पौधे लगाकर मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

बरवाला, 5 जून (पवन राणा): विश्व पर्यावरण दिवस के विशेष अवसर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकूला द्वारा अपने फार्म पर एक भव्य पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकूला हर वक्त प्रो. डा. श्रीदेवी तल्लाप्रगडा की अगुवाई में किसान समुदाय के लिए समर्पित है और किसानों तक खेती के नए और वैज्ञानिक तरीकों को पहुंचाने में लगातार जुटा हुआ है।

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए फार्म परिसर में विभिन्न प्रकार के फलदार पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. रविंदर सिंह चौहान उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने कर-कमलों से फलदार पौधा लगाकर इस अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर क्षेत्र के गांव के पंच, प्रगतिशील



कृषि विज्ञान केंद्र फार्म पर किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पौधारोपण करते हुए। (छाया: राणा)

किसान और ग्रामीण युवा मौजूद रहे, जिन्होंने पर्यावरण को हरा-भरा रखने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि ने अपने संदेश में बताया कि आज के समय में पर्यावरण को बचाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकूला का यह केमिकल-मुक्त फार्म इस बात का आदर्श उदाहरण है कि कैसे हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना बेहतर और सुरक्षित खेती कर सकते हैं। यहां की तकनीकें हर किसान तक पहुंचनी चाहिए।

इस अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान किसान प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कृषि विज्ञान केंद्र, पंचकूला के पूरे फार्म का विस्तृत दौरा किया और केंद्र के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर फार्म पर चल रही विभिन्न कृषि गतिविधियों और तकनीकों का बारीकी से निरीक्षण किया।केंद्र के वैज्ञानिकों ने आए हुए युवाओं और सरपंचों को फार्म का दौरा कराया और उन्हें प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी और जहर-मुक्त भोजन मिल सके।

कृषि भवन पंचकूला में हुआ पदभार ग्रहण समारोह

राजपाल बैनीवाल ने संभाला हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण का कार्यभार

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण की कार्यकारी समिति के नवनियुक्त चेयरमैन राजपाल बैनीवाल ने मंगलवार को पंचकूला के सेक्टर-21 स्थित हरियाणा कृषि भवन में आयोजित समारोह के दौरान अपना कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के एडीसी महेंद्र सिंह सैनी ने उन्हें पदभार सौंपते हुए शुभकामनाएं दीं। कार्यभार ग्रहण समारोह में हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. आर.एस. चौहान ने राजपाल बैनीवाल का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इसके अलावा प्राधिकरण के अकाउंट अधिकारी डी.पी. वर्मा सहित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनका अभिनंदन किया। समारोह में भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वी.के. सुध सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। राजपाल बैनीवाल को नई जिम्मेदारी की बधाई देने के लिए फतेहाबाद जिले सहित विभिन्न क्षेत्रों से किसान, समर्थक और पार्टी कार्यकर्ता भी बड़ी संख्या में पहुंचे।



फतेहाबाद। कार्यभार संभालते राजपाल बैनीवाल।

समर्थकों में उत्साह

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के एडीसी महेंद्र सिंह सैनी ने कहा कि राजपाल बैनीवाल का भारतीय जनता पार्टी के साथ तीन दशक से अधिक का समर्पित जुड़ाव रहा है। उल्लेखनीय है कि राजपाल बैनीवाल फतेहाबाद जिले के गांव ढाबी कलां के निवासी हैं तथा पिछले तीन दशकों से अधिक समय से भारतीय जनता पार्टी में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनके कार्यभार ग्रहण करने से क्षेत्र के किसानों और समर्थकों में उत्साह का माहौल है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए समूह गठित

किसान कल्याण प्राधिकरण ने कृषि वैज्ञानिकों, अफसरों व प्रगतिशील किसानों को किया शामिल

अमर उजाला ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा में रासायनिक खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने का प्रयास किया जा रहा है। किसानों को जैविक व प्राकृतिक खेती से जोड़ने के लिए हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण ने छह सदस्यीय समूह का गठन किया है।

प्राधिकरण ने कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों और प्रगतिशील किसानों को इसमें शामिल किया है। यह समिति राज्य में प्राकृतिक एवं जैविक खेती की स्थिति का आकलन करेगी। किसानों के लिए व्यावहारिक नीतियां बनाने के सुझाव भी देगी। इन्हीं सिफारिशों के आधार पर नई नीतियां बनाने में सहयोग मिलेगा। हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रविंद्र सिंह चौहान के मार्गदर्शन में यह समूह कार्य करेगा। वाईएस परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के कुलपति राजेश्वर सिंह चंदेल इसकी अध्यक्षता करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र सोनीपत के वरिष्ठ कृषि अर्थशास्त्री परमिंदर मलिक को संयोजक बनाया गया है। राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड नई दिल्ली के प्रमुख विनीत कुमार और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक प्रशांत कुमार भी समूह में हैं। पंचकूला के उप कृषि निदेशक राकेश पोरिया, रेवाड़ी के प्रगतिशील किसान यशपाल खोला और प्राधिकरण की शोध सहायक वंदना को सदस्य नामित किया गया है।

इस कार्य समूह का मुख्य उद्देश्य हरियाणा में प्राकृतिक और जैविक खेती की मौजूदा स्थिति जानना है। समूह फसलवार उत्पादन और उपज में अंतर का अध्ययन करेगा। यह विभिन्न जिलों में जैविक खेती के विस्तार का भी आकलन करेगा।

राज्य सरकार की ओर से संचालित योजनाओं की समीक्षा की जाएगी। न्यूनतम समर्थन मूल्य, खरीद व्यवस्था और बीज-खाद आपूर्ति पर भी सुझाव देगा।

प्रमुख कार्य और सिफारिशें

समिति फसल बीमा और कृषि विस्तार सेवाओं को प्रभावी बनाने के सुझाव देगी। यह उन्नत बीज किस्मों और आधुनिक कृषि यंत्रों पर भी काम करेगी। कम लागत वाली खेती तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के तरीके सुझाएगी। सूखा रोधी और जलवायु परिवर्तन के अनुरूप फसल किस्मों पर शोध की समीक्षा होगी। विशेषज्ञ जैविक उत्पादों के लिए बेहतर बाजार व्यवस्था, मूल्य संवर्धन और फसल विविधीकरण पर सिफारिशें देंगे।

हरियाणा में प्राकृतिक व जैविक खेती को मिलेगा बढ़ावा: सीईओ डॉ. रविंद्र सिंह चौहान

पवन शर्मा, गुड़गांव मेल,बरखबरा।

माननीय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैणी के दिशानिर्देश पर हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण ने राज्य में रासायनिक खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं प्राकृतिक खेती को मुख्यधारा में लाने के लिए बड़ा कदम उठाया है।हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) डॉ. रविंद्र सिंह चौहान के मार्गदर्शन में प्राधिकरण ने कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों और प्रगतिशील किसानों को शामिल कर एक विशेषज्ञ कार्य समूह गठित किया है, जो राज्य में प्राकृतिक एवं जैविक खेती की स्थिति का आकलन कर किसानों के लिए व्यावहारिक नीतियां सुझाएगा। प्राधिकरण द्वारा जारी आदेश के अनुसार इस कार्य समूह की अध्यक्षता वाई. एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल करेंगे। समूह में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र सोनीपत के वरिष्ठ कृषि अर्थशास्त्री डॉ. परमिंदर मलिक को संयोजक बनाया गया है। इसके अलावा राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड, नई दिल्ली के प्रमुख श्री विनीत कुमार, ह.कृ.वि. के वैज्ञानिक डॉ. प्रशांत कुमार, पंचकुला के उप कृषि निदेशक डॉ. राकेश पोरिया, रेवाड़ी के प्रगतिशील किसान श्री यशपाल खोला और हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण की शोध सहायक सुश्री वंदना को सदस्य नामित किया गया है। कार्य समूह का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि हरियाणा में प्राकृतिक और जैविक खेती की मौजूदा स्थिति क्या है। समूह फसलवार उत्पादन, उपज में अंतर और विभिन्न जिलों में जैविक खेती के विस्तार का अध्ययन करेगा। इसके साथ ही सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं, न्यूनतम समर्थन मूल्य, खरीद व्यवस्था, बीज व खाद की आपूर्ति, फसल बीमा और कृषि विस्तार सेवाओं की समीक्षा कर उन्हें और प्रभावी बनाने के सुझाव देगा। समिति उन्नत बीज किस्मों, आधुनिक कृषि यंत्रों और कम लागत वाली खेती तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के तरीकों पर भी काम करेगी। साथ ही सूखा रोधी और जलवायु परिवर्तन के अनुरूप फसल किस्मों पर चल रहे शोध की समीक्षा कर यह पता लगाएगी कि किसानों की जरूरत के हिसाब से और क्या किया जा सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि केवल उत्पादन बढ़ाने से काम नहीं चलेगा, इसलिए कार्य समूह जैविक उत्पादों के लिए बेहतर बाजार व्यवस्था, मूल्य संवर्धन और फसल विविधीकरण पर भी सिफारिशें देगा। इसका लक्ष्य है कि किसान प्राकृतिक तथा जैविक खेती अपनाकर न केवल पर्यावरण बचाएं बल्कि अपनी आय भी बढ़ा सकें। समूह किसानों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं और सुझाव दर्ज करेगा ताकि नीतियां जमीनी हकीकत पर आधारित हों। अयोग के सी ई ओ, डॉ. रविंद सिंह चौहान का कहना है कि इस कार्य समूह की सिफारिशें भविष्य में हरियाणा की नई कृषि नीति और किसान कल्याण योजनाओं का आधार बनेंगी।

हरी खाद वाली फसलें उगाएं, प्रति एकड़ 1 हजार अनुदान मिलेगा

चंडीगढ़। हरियाणा में फसल विविधीकरण के लिए हरी खाद से संबंधित फसलों को उगाने वाले किसानों को प्रति एकड़ 1 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि अनुदान के रूप में मिलेगी। मेरी फसल-मेरा ब्योरा पोर्टल के माध्यम से किसान हरी खाद की श्रेणी में आने वाली 6 फसलों के लिए 25 अप्रैल तक पंजीकरण करा सकेंगे।

कृषि एवं किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. आरएस चौहान ने बताया कि फसल विविधिकरण के लिए के लिए हरी खाद के रूप में ढैंचा के अलावा दलहनी फसलों ग्रीष्मकालीन मूंग, उड़द, लोबिया, मोंठ, अरहर, सोयाबीन व ग्वार के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

इच्छुक किसान पोर्टल पर पंजीकरण करा सकते हैं। किसान स्वयं भी फसल बुवाई का फोटो अपलोड कर सकेंगे। फसल की बुवाई के बाद सत्यापन होगा और इसके बाद किसानों के खातों में सीधे प्रति एकड़ 1000 रुपये की प्रोत्साहन राशि भेजी जाएगी। किसानों को स्वयं बाजार से बीज खरीदकर संबंधित फसलों की बुवाई करनी होगी। ब्यूरो

हकृवि के दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ का समापन

जागरूक किसान ही मजबूत कृषि की पहचान : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ सम्पन्न हुआ। कृषि मेला 'सतत कृषि समृद्धि की राह' विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के हित में समय-समय पर उन्नत किस्मों एवं जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीकों का विकास कर रहा है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे गांव स्तर पर गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन की पहल करें, जिससे समय पर बीज उपलब्ध हो सके और ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित हों। कुलपति ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि वर्तमान समय में जल, भूमि एवं पर्यावरण का संतुलित उपयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि नई तकनीकों जैसे प्राकृतिक खेती, टिश्यू कल्चर तथा कृषि में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के समुचित उपयोग से उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ संसाधनों का संरक्षण भी संभव है। उन्होंने कहा कि यह मेला केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि किसानों और वैज्ञानिकों के बीच ज्ञान एवं अनुभवों का संगम है, जो भविष्य की कृषि दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कुलपति ने कहा कि हमें ऐसी टिकाऊ एवं लाभकारी कृषि प्रणाली अपनानी होगी, जो न केवल किसानों की आय बढ़ाए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को भी सुरक्षित रखे। इस



अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों, संस्थानों एवं कंपनियों को सम्मानित किया गया। मेले में बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र, कीटनाशी, पशु चिकित्सा एवं अन्य नवाचारों से संबंधित स्टॉल आकर्षण का केंद्र रहे।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्टॉलों को किया गया सम्मानित

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रमेश यादव ने बताया कि स्टॉलों में से सीड्ज ग्रुप में समग्र सीड्स प्रा. लि. प्रथम, आईएफएसए सीड्स प्रा. लि./स्टार एग्री सीड्स प्रा. लि. द्वितीय तथा शक्तिवर्धक हाइब्रिड सीड्स तृतीय स्थान पर रहे। सीसीएसएचएयू विभाग समूह में सीड्ज साइंस एंड टेक्नोलॉजी विभाग प्रथम, सब्जी विज्ञान विभाग द्वितीय तथा एबिक बेकरी/ऑयलसीड सेक्शन तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम में हरियाणा किसान कल्याण प्राधीकरण के सीईओ डॉ. रविन्द्र चौहान भी उपस्थित रहे। धन्यवाद प्रस्ताव सह निदेशक विस्तार डॉ. सुनील ढांडा ने किया। मंच का संचालन डॉ. कनिका एवं श्वेता ने किया।

कहा ,माइक्रो-इरिगेशन को बढ़ावा देकर पानी की बचत करें

एरोमैटिक पौधों की खेती के प्रति किसानों को प्रोत्साहित करें : नायब

चंडीगढ़, राजेश जैन (पंजाब केसरी) :हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि अधिकारी प्रदेश में मेडिसिनल और एरोमैटिक पौधों की खेती के प्रति किसानों को प्रोत्साहित करें ताकि कम कृषि भूमि में किसान अधिक आमदनी कर सकें। उन्होंने माइक्रो-इरिगेशन को बढ़ावा देकर पानी की बचत करने के लिए भी किसानों में जागरूकता पैदा करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री आज यहां हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण की "रिपोर्ट ऑफ़ वर्किंग ग्रुप ऑन प्रमोशन ऑफ़ मेडिसिनल एंड एरोमेटिक प्लांट्स इन हरियाणा" तथा " रिपोर्ट ऑन वर्किंग ग्रुप ऑन प्रमोशन ऑफ़ माइक्रो इरिगेशन इन हरियाणा" का विमोचन कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने खरीफ फसलों के लिए मूल्य नीति निर्धारण पर आयोजित बैठक (विपणन सत्र 2026 -27) की अध्यक्षता भी की और इस संबंध में प्रस्ताव तैयार करके केंद्र सरकार को भेजने के निर्देश दिए। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग रस्तोगी, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रधान सचिव श्री पंकज अग्रवाल, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त प्रधान सचिव डॉ साकेत कुमार , कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के निदेशक श्री राजनारायण कौशिक , हरियाणा किसान कल्याण प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ रविंदर सिंह चौहान तथा अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री हितेश कुमार मीणा समेत अन्य अधिकारी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि मेडिसिनल और एरोमैटिक पौधों का क्षेत्र केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें प्रोसेसिंग, एक्सट्रैक्शन, वैल्यू एडेड प्रोडक्ट्स का निर्माण और मार्केटिंग जैसी कई गतिविधियां शामिल होती हैं। इस कारण यह क्षेत्र ग्रामीण इलाकों में रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर सकता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।



भारत दुनिया के सबसे बड़े मेडिसिनल जड़ी-बूटियों के निर्यातकों में शामिल

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि भारत दुनिया के सबसे बड़े मेडिसिनल जड़ी-बूटियों के निर्यातकों में शामिल है और इस क्षेत्र में हरियाणा भी अपनी रणनीतिक स्थिति और मजबूत कृषि ढांचे के कारण महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। उन्होंने कहा कि यदि राज्य में मेडिसिनल और एरोमैटिक पौधों को टिकाऊ और योजनाबद्ध तरीके से बढ़ावा दिया जाए तो यह क्षेत्र किसानों और उद्यमियों के लिए बड़े आर्थिक अवसर पैदा कर सकता है।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि अनुसंधान संस्थान और निजी क्षेत्र मिलकर इस दिशा में योजनाबद्ध प्रयास कर हरियाणा को मेडिसिनल और एरोमैटिक पौधों के उत्पादन और प्रोसेसिंग का एक प्रमुख केंद्र बनाने की संभावनाओं को तलाश करें। नायब सिंह सैनी ने " रिपोर्ट ऑन वर्किंग ग्रुप ऑन प्रमोशन ऑफ़ माइक्रो इरिगेशन इन हरियाणा" का विमोचन करते हुए कहा कि अधिकारी किसानों को ऐसी फसलें बोने के लिए प्रेरित करें जिनमें माइक्रो-इरिगेशन का प्रयोग किया जाता है।

गुरुग्राम में खुलेगा सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम का सेंटर

गुरुग्राम, कुमार प्रवीण, (पंजाब केसरी): साइबर सिटी अब सिंगापुर के बिजनेस का हब बनेगा। शुक्रवार को इसकी आधारशिला रख दी गई है। गुरुग्राम में सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम का बिजनेस सेंटर खुलेगा। पूरे प्रदेश में सिंगापुर की कंपनियों के ऑफिस खोले जाएंगे। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने निवेश के लिए सिंगापुर के निवेशकों को आमंत्रित किया है। सूबे के मुखिया नायब सिंह सैनी से शुक्रवार को सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम के अध्यक्ष प्रसून मुखर्जी ने मुलाकात की। इस दौरान हरियाणा में औद्योगिक निवेश, व्यापारिक सहयोग तथा सिंगापुर की कंपनियों के लिए उपलब्ध अवसरों को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम और सिंगापुर के निवेशकों को हरियाणा में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने तथा निवेशकों को अनुकूल माहौल प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। सरकार पारदर्शी नीतियों, सरल प्रक्रियाओं और बेहतर बुनियादी ढांचे के माध्यम से निवेश को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार निवेशकों को हर संभव सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है। हरियाणा में निवेश करने के लिए आने वाले निवेशकों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं आने दी जाएगी और उनके हितों की रक्षा सुनिश्चित की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में उद्योगों के विस्तार से रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे और प्रदेश की आर्थिक प्रगति को और गति मिलेगी। बैठक के दौरान गुरुग्राम में सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम का बिजनेस सेंटर स्थापित करने के प्रस्ताव पर भी चर्चा की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरुग्राम में बिजनेस सेंटर स्थापित होने से सिंगापुर की कंपनियों को हरियाणा में अपने कार्यालय खोलने और निवेश करने के लिए एक बेहतर मंच मिलेगा। इससे दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध और अधिक मजबूत होंगे। इस अवसर पर सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम के अध्यक्ष प्रसून मुखर्जी ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को सिंगापुर आने का आमंत्रण दिया। मुखर्जी ने कहा कि सिंगापुर इंडिया बिजनेस फोरम के निवेशक सिंगापुर सरकार के साथ मिलकर हरियाणा में निवेश के अवसरों को लेकर काफी उत्साहित हैं।



● मुख्यमंत्री नायब सिंह से मिले सिंगापुर इंडिया बिज़नेस फोरम के अध्यक्ष प्रसून मुखर्जी